IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

महिला स्वास्थ्य : एक परिचय

रीना कुमारी

शोधार्थी, गृह विज्ञान विभाग, जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा

भारतीय समाज में, खास तौर पर महिलाओं के, रोग ग्रस्त होने पर आधुनिक दवाओं की अपेक्षा रोगों के उपचार में परंपरागत दवाओं को अत्याधिक महत्व दिया जाता है। फास्टर (1958), इरासन्स(1958) और साइमन (1975) आदि का मत है कि परंपरागत उपचारों से बाध्य होकर लोग घरेलू उपचारों का प्रयोग करते हैं। शुक्ला (1980) के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकाधिक लोगों द्वारा घरेलू दवाओं के माध्यम से उपचार किया जाता है।

हमारे देश में महिलाओं का बहुत-सा घरेलू कार्य अनुत्पादक माना जाता है और आर्थिक दृष्टि से उसका आकलन नहीं किया जाता है, तथापि राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के अनुसार प्रत्येक वर्ष अप्रैल.जून माहों में महिला कामगारों की बीमारी के कारण अनुपस्थिति का प्रतिशत 30 है। इंटरनेशनल प्लॉट पैरंटहुड फेडरेशन की 1993 की रिपोर्ट में कहा गया है की दुनिया में हर साल 5 करोड़ महिलाएं गर्भपात करवाती है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में गर्भपात संबंधी कुशल और विश्वसनीय सेवाओं का घोर अभाव है। भारत में विवाहेतर शारीरिक संबंधों को हेय दृष्टि से देखा जाता है और इस प्रकार कार्य गर्भ को गिराने के लिए अकुशल दाइयों का सहारा लिया जाता है। भारत में अभी भी गर्भनिरोधक गोलियों का इस्तेमाल करने वाली महिलाओं के प्रति लोगों का रवैया उदार नहीं है भारतीय महिला के लिए संतानोत्पत्ति विशेषकर पुत्र.जन्म उसकी अस्मिता और सुहाग की रक्षा का कारगर उपाय है। अतः उसे अपने अस्तित्व की रक्षा हेतु बच्चे को जन्म देना अनिवार्य है। गर्भधारण के समय और दो बच्चों के जन्म के बीच के अंतराल का निर्णय प्राय:

पति या सास ही लेती है। ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी गर्भपात के लिए पुराने, कष्टकारी और जोखिम भरे तरीकों को नीम-हकीमों द्वारा अपनाया जाता है। इससे महिलाओं की मृत्यु दर में बढ़ोतरी होती है तथा एक अनुमान के अनुसार भारत में अवैध या अकुशल गर्भपात के कारण हर साल 5 लाख महिलाएं असमय काल - कलवित हो जाती है। जो महिलाएं जीवित रह जाती हैं वे पेट की आंतों के घाव, खून की कमी, दुर्बलता और अन्य रोगों की शिकार हो जाती है। कुछ महिलाएं अकुशल नीम - हकीमों से गर्भपात करवाकर सदा के लिए बांझ हो जाती है। सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए हावर्ड स्कूल में हुई एक बैठक में यह कहा गया है कि एशियाई देशों में महिलाएं अब सबसे अधिक एड्स की शिकार हो रही है। एशिया में महिलाएं शारीरिक एवं पारंपरिक रूप से अक्षम है। महिलाएं कई दबाव के कारण सेक्स की अनचाही स्थितियों को स्वीकार करने के लिए बाध्य होती है। भारत में महिलाएँ औसतन 8 - 9 बार गर्भवती होती हैं और वे अपनी उर्वरता का लगभग 80% भाग गर्भावस्था एवं स्तनपान में व्यतीत करती हैं। अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि निम्न आयु समूह की गर्भवती महिलाएं 1100 कैलोरीज़ ऊर्जा की कमी तथा स्तनपान कराने वाली महिलाएं 1000 कैलोरीज ऊर्जा की कमी से ग्रस्त होती है। गर्भावस्था में खून की कमी के कारण 15 से 20% महिलाओं की मृत्यु हो जाती है। सरकारी कार्यालयी सूचना के अनुसार प्रति एक लाख जन्म पर 400 से 500 माताओं की मृत्यु हो जाती है।

भारत में महिलाओं के स्वास्थ संबंधी समस्याओं का एक प्रमुख कारण कम उम्र में शादी भी है। यद्यपि कानूनी दृष्टि से 18 वर्ष से कम आयु की बालिका का विवाह नहीं हो सकता, फिर भी बालिका विवाह की औसत आयु देहाती क्षेत्र में 15.8 वर्ष तथा शहरी क्षेत्र में 16.6 वर्ष है।

महिलाओं में व्याप्त कुपोषण भी उनके स्वास्थ्य के लिए जिम्मेदार हैं। जन्म से ही लड़कियों के साथ खानपान में भेदभाव किया जाता है, जिससे उनके स्वास्थ्य पर कुप्रभाव पड़ता है। एक सर्वेक्षण के अनुसार बेटियों को औसतन पांच माह और बेटों को औसतन दस माह स्तनपान कराया जाता है। कुपोषित बालिकाएँ जब किशोरावस्था से युवावस्था में प्रवेश करती है तो इनकी जनन-शक्ति कमजोर रहती है, जो प्रसव के समय अकाल मृत्यु से लेकर अनेक प्रकार की व्याधियों से ग्रस्त हो जाती हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि महिला स्वास्थ्य का सीधा संबंध उसके आर्थिक पक्ष से हैं और महिला स्वास्थ्य पर निवेश भारत की विकासशीलता से सीधा संबंध रखता है।

संदर्भ सूची :-

1. भारत सरकार, नेशनल पर्सपेक्टिव प्लान फॉर वुमन ,1988 - 2000

ए डी महिला एवं शिशु कल्याण विभाग - मानव संसाधन विकास मंत्रालय नई दिल्ली।

2. Shamim Alim's "Women development, Problem and Prospect" Padmaya Vani - Women and Health care, New Delhi, 1996.